



ओ३म्

॥ कृष्णन्तो विश्वमार्यम् ॥

आर्य वैदिक दर्शन

Arya Vaidik Darshan
(Monthly)



जो दूसरों को गुलाब के फूल बांटता है, उसके हाथ सदा 'खुशबू' से महकते रहते हैं।
सबको खुशी बांटे और सदा सुखी रहें।

सृष्टि संवत्	: १,९६,०८,५३,११५
विक्रम संवत्	: २०७१
दयानन्दाब्द	: १९०
वर्ष	: १
अंक	: ५ (मे - २०१४)
वार्षिक शुल्क	: १०० रुपये.
पृष्ठ संख्या	: ८

गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभानुं मासिक मुद्रापत्र

स्वत्वाधिकारी गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, अहमदाबाद की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुरेशचन्द्र अग्रवाल द्वारा नचिकेत आर्ट प्रिन्टर्स, ११, गैलेक्सी कोमर्शियल सेन्टर, जवाहर रोड, राजकोट से मुद्रित तथा कार्यालय आर्यसमाज, महर्षि दयानंद मार्ग, कांकरिया, अहमदाबाद-३८००२२ से प्रकाशित, सम्पादक-सुरेशचन्द्र अग्रवाल

आर्यसमाजना पदाधिकारीयो, आर्यसभासदो अने आर्य सदस्यो माटे यिंतन शिबिर योजशे. गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभानुं आयोजन

आर्यसमाजनां संगठन साथे जोडयेला तमाम सदस्यो, सभासदो अने पदाधिकारीओनी वैदिक सिद्धान्तो प्रत्ये निष्ठामां वधारो थाय अने वेदप्रचारना कार्यने वेग आपवा तत्पर रहे ओ उद्देश्यथी गत सप्टेम्बर - २०१३मां प्रांतीय सभा द्वारा आध्यात्मिक, सैद्धांतिक, सांगठनिक यिंतन शिबिरनुं आयोजन करवामां आवेल हुतुं. जेनी सङ्गताथी प्रेरार्थने वर्षमां बे वખत आ प्रकारनी शिबिर योजवा सभाओे नक्की करेल छे. तदनुसार द्वितीय शिबिर आगामी ता. २०-२१-२२ जून २०१४ना योजवा अंतरंग सभानी बेठकमां निर्णय लेवामां आवेल छे. शिबिर स्थण महर्षि दयानंद सरस्वती स्मारक (महालय) टंकारा (जि. मोरबी) रहेशे.

आर्यसमाज साथे जोडयेला तमाम सदस्योने लविष्यमां आ प्रकारनी शिबिरमां प्रशिक्षण लेवानुं रहेशे. सभाना आ प्रयासने सौओे बिरदावेल छे.

गुजरातनी दरेक आर्यसमाजोमां शंकासमाधान केन्द्र अने वैदिक पाठशाळा शरू कराशे.

आर्यसमाज मंदिरोनो द्वार जिज्ञासुओो माटे हुंमेशा भूला रहेवा जोर्ये. आथी प्रांतीय सभानी गत बेठकमां निर्णय लेवामां आवेल छे के दरेक आर्यसमाजोमां 'शंका समाधान केन्द्र' स्थापित करवुं. जेमां जोर्ये जनता पोताना मनमां उद्भवती वैदिक सिद्धान्तोने लगती शंकाओना समाधान माटे आवी शके. शंका समाधान करवानी जवाबदारी आर्यसमाजनां पुरोहित निभावशे. अन्य विद्वाननी व्यवस्था होय तो तेमनो पाण लाब लथ शकाशे. आ अंगेनुं सूचना पत्र (बोर्ड) दरेक आर्यसमाज मंदिरना मुष्य दरवाजे लगाववामां आवशे. जेमां विद्वानने भणवानो समय दर्शाववामां आवशे.

प्रांतीय सभाओे अेक अन्य महत्त्वपूर्ण निर्णय लीधो 'वैदिक पाठशाळा' अंगेनो. दरेक माता-पितानी तेमज समाज वडीलो, महानुभावोनी यिंता छे के नवी पेढी अधार्मिक बनती जाय छे. वैचारिक वातावरण अतिभोगवादी अने नास्तिकनुं

बनतुं जाय छे. बाणको-किशोरो अने युवानोनां वाणी-वर्तन, पान पान, दिनचर्या, शिष्टाचार वगैरेमांथी वैदिक-भारतीय संस्कृतिनो प्रभाव ओसरतो जाय छे. जो आ ज गतिओे सांस्कृतिक अधःपतन यालु रहेशे तो आगामी २५-५० वर्षमां ज वैदिक संस्कृति मात्र छित्तिहासनो विषय बनीने रहेशे.

प्रांतीय सभा द्वारा आ अधःपतनने अटकाववा दरेक आर्यसमाजो द्वारा 'वैदिक पाठशाळा' शरू करवानो निर्णय लेवामां आवेल छे. आ पाठशाळामां आर्यसमाजनां सदस्योनां संतानो (पुत्र-पौत्र, पुत्री-पौत्री) तेमज अन्य बाणकोने पाण प्रवेश अपाशे. आ पाठशाळा सप्ताहमां अेक के बे दिवस बे-बे कलाक माटे प्रशिक्षण आपशे. पाठ्यक्रम सभा द्वारा तैयार करीने भोकलवामां आवशे. आ पाठशाळा आगामी जून/जुलाइथी आरंभ करवामां आवशे.

भृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सामूहिक पारिवारिक प्रवास योजशे.

श्री भृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभानी गत बेठकमां निर्णय लेवामां आवेल छे के सौराष्ट्रनां आर्यपरिवारोनो आपसमां परिचय अने स्नेह वधे अने निकटता स्थापित थाय ओ माटे सामूहिक पारिवारिक प्रवासनुं आयोजन करवुं. प्रवास स्थण तरीके आधु पर्वत पसंद करवामां आव्युं. ज्यां स्थित आर्यसमाजनां गुरुकुणनो वार्षिक उत्सव आगामी ता. ३१ मे अने १-२ जून २०१४ ना ठिजववामां आवशे. जेमां सौराष्ट्रना आर्यसमाजोनां आर्यपरिवारो भाग लेवा जशे. प्रवास दरम्यान यज्ञ अने वैदिक साहित्यनो प्रचार कराशे. रस्तामां आवता प्राकृतिक अने ऐतिहासिक दर्शनीय स्थणोनी मुलाकात लेशे. आ प्रवासमां जोडावा छंयनारे पोतानां नाम नञ्जकनी आर्यसमाजमां नोंधावी देवा.

સાર્વદેશિક આર્ય પ્રતિનિધિ સભા દ્વારા પ્રેરિત અને ગુજરાત પ્રાંતીય આર્ય પ્રતિનિધિ સભા દ્વારા આયોજિત આર્ય પરિવાર વિવાહ યોગ્ય યુવક-યુવતી પરિચય સંમેલન

સાર્વદેશિક આર્યપ્રતિનિધિ સભાની પ્રેરણાથી ગુજરાત પ્રાંતીય આર્ય પ્રતિનિધિ સભા દ્વારા આર્ય પરિવાર વિવાહ યોગ્ય યુવક-યુવતી પરિચય સંમેલન યોજવામાં આવનાર છે. જેના સ્થળ અને તારીખ હોવે પછી જાણાવવામાં આવશે. જે આર્ય પરિવારો પોતાના વિવાહ યોગ્ય પુત્ર/પુત્રીઓની નોંધણી કરાવવા ઇચ્છતા હોય તેઓએ આ સાથેનું નોંધણી પત્રક તમામ વિગતો ભરીને

તેની સાથે 'ગુજરાત પ્રાંતીય આર્ય પ્રતિનિધિ સભા' ના નામ રૂા.૨૦૦ (રૂા. બસો) નો કિમાંડ ડ્રાફ્ટ જોડીને તા.૩૧-૦૫-૨૦૧૪ સુધીમાં ડા. અવિનાશ ભટ્ટ સંયોજક, આર્ય પરિવાર વિવાહ યોગ્ય યુવક-યુવતી પરિચય સંમેલન C/O આર્યસમાજ, આર્યસમાજ માર્ગ, ખંભાળિયા દરવાજા બહાર, જામનગર પિન : ૩૬૧ ૦૦૫ ના સરનામે મોકલી આપવું.

નોંધણી પત્રક

નોંધણી નંબર :

રસીદ નંબર

વ્યક્તિગત માહિતી

૧. યુવક/યુવતીનું નામ:..... ગોત્ર :
૨. જન્મ તારીખ:.....જન્મ સ્થાન :
૩. રંગ:..... વજન : ઊંચાઈ :
૪. યોગ્યતા (શૈક્ષણિક તથા અન્ય) :
૫. ઇંધો / વ્યવસાય કરતા હોય તો તેની વિગત અને સરનામું :
૬. માસિક આવક:.....

ઉમેદવારનો
તાજેતરનો
ફોટો લગાવવો.

પારિવારિક માહિતી

૭. પિતા/પાલકનું નામ:.....વ્યવસાય માસિક આવક
૮. પૂરુ સરનામું:.....
ફોન નંબર:..... મોબા. ઇમેઇલ
૯. મકાન પોતાનું છે / ભાડે છે:.....
૧૦. માતાનું નામ:..... અભ્યાસ વ્યવસાય.....
૧૧. ભાઈ - વિવાહિત :..... અવિવાહિત :
- બહેન - વિવાહિત:..... અવિવાહિત :
૧૨. ઉમેદવાર / વાલી કયા આર્યસમાજના સદસ્ય છે ?
૧૩. યુવક / યુવતીની પસંદગી અંગે ટૂંકી વિગત આપવી :
૧૪. યુવક/યુવતી નીચેનામાંથી જો હોય તો ✓ કરો.
વિધુર વિધવા છૂટાછેડા અપંગ
૧૫. અન્ય જરૂરી બાબત જણાવવા ઇચ્છતા હોય તો અહીં ટૂંકમાં જણાવો.
.....
- તારીખ :પિતા / માતા / વાલીની સહી,

નોંધ :

૧. વિવાહ સંબંધ બંને પક્ષોએ પોતાની આપસની સંતુષ્ટીથી કરવો. પ્રાંતીય સભા આ માટે જવાબદાર રહેશે નહીં.
૨. પરિચય સંમેલનમાં માતા-પિતા/વાલીએ પોતાના પુત્ર-પુત્રીને સાથે લાવવા.
૩. સમયસર નોંધણી પત્રક જમા થયે તેની માહિતી યુવક-યુવતી નિર્દેશિકામાં પ્રકાશિત થશે.

- ડા. અવિનાશ ભટ્ટ
સંયોજક (૯૪૨૬૯ ૪૬૨૦૦)

इस मास के
विशिष्ट व्यक्ति

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

- डॉ. रामप्रकाश

कली मुस्काई और फूल बन गई। डाल मस्ती में झूम उठी। पुष्प ने धरती से, जल से, वायु से, सूर्य से... जीवन लिया, शक्ति ली। उसे जो चाहिए था वह उसने विश्वपति के पुण्य उद्यान में सर्वत्र बिखरी सम्पदा से जी भर कर लिया। फिर उसने अपनी मधुर मुस्कान से धरा को मुखरित किया, अपना सौरभ लुटाया, अपने रंग रूप से प्रकृति को सौंदर्य प्रदान किया। समय बीता। वह मुरझा गया। पंखुडियाँ धूल में मिल गईं। वह रूप, वह रंग, वह गंध... कुछ भी न रहा परन्तु उसे इसका कोई दुःख नहीं, कोई पीडा नहीं, कोई व्यथा-वेदना नहीं। उसका जीवन-चक्र पूरा हो चुका था; जो लेना था, ले लिया, जो देना था, दे दिया। कोई सपना अधूरा न रहा फिर दुःख कैसा?

परन्तु... एक कली...

ऐसी कली जो खिलने से पूर्व तोड़ दी गई, मसली गई, मिट गई, मिट्टी हो गई...

न अभी जीवन ले पाई, न जीवन दे पाई।

कितनी आशाएँ थीं उससे! सब धरी रह गईं।

माली से पूछो उसके दिल पर क्या बीती?

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी उस कली की भाँति थे जो खिलने से पूर्व मुरझा गई। रजत श्वेत एवं शीतल ओस की भाँति वह संतप्त धरा की प्यास बुझाने आए परन्तु क्षण में ओझल हो गए। अमावस्या की घोर निशा में प्रकाश-पुंज बनकर आए परन्तु कब उदय हुए, कब चमके, कब छिप गए - पता ही न चला। इतना छोटा था उनका जीवनकाल। लोग देखते रह गए। यह धरती उन्हें रहने के योग्य नहीं जाँच थी क्या?

महत्त्व अधिक का नहीं, दिव्यता का है। दिव्य गुणों के कारण उनका यह छोटा - सा जीवन प्रेरणा का अविरल स्रोत है। वे गणों के भण्डार थे। वे थे एक पिण्डभक्त पुत्र, सहृदय सखा, कुशल खिलाडी, सक्रिय छात्र नेता, धुन के धनी, अदम्य उत्साह की मूर्ति, विस्मयोत्पादक स्मरणशक्ति एवं प्रतिभा के स्वामी, अपरिमित ज्ञान के भण्डार, विद्यावारिधि, मनमोहक कवि, योग्य लेखक, गम्भीर दार्शनिक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, कुशल सम्पादक, सफल अध्यापक, सुलझे हुए शिक्षा-शास्त्री, ओजस्वी वक्ता, तपस्वी प्रचारक, प्रबल सुधारक, दूरदर्शी नेता, स्वाभिमानी देश भक्त, सच्चे योगी, तपोनिष्ठ मुनि, वेद-शास्त्रों के मर्मज्ञ, समर्पित सत्यान्वेषक, परम ऋषिभक्त, ईश्वरानुरागी...। इन्हीं गुणों के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वे अमिट छाप छोड़ गए।

पण्डित जी में ये गुण किस प्रकार विकसित हुए, इसकी भी एक कहानी है। जब पण्डित जी ने ऋषि दयानन्द सरस्वती को इहलीला संवरण करते देखा तो उन पर एक जादू-सा हो गया। वे जितना-जितना ऋषि को समझते गए, उतना ही रंग गहरा होता चला गया। बस, इसी रंग का प्रभाव था कि एक बार पण्डित जी ने दो कपड़ों पर आर्यसमाज के पाँच-पाँच नियम लिखवा लिए। प्रातःकाल जलपान किया। फिर एक कपडा आगे लटका लिया, दूसरा पीठ से बाँध लिया और चलने लगे ऋषि सन्देश सुनाने के लिए। देवी ने देखा तो विस्मित हो गई। हाथ पकड़ कर बोली - "पतिदेव! यह क्या हाल बनाया है? क्या कहेंगे लोग?" उत्तर मिला-भोली! तू नहीं जानती। अब यह जीवन मेरा नहीं रहा। मैं

इसे ऋषि के चरणों में अर्पित कर आया हूँ। अब रोम-रोम उनकी धरोहर है, देवी। कोई कहेगा - इसकी चिन्ता कैसी?"

पण्डित गुरुदत्त ने ऋषिवर को समझ लिया था, इसीलिए श्रद्धा की यह अवस्था थी। वे जानते थे कि लोग अभी उस दिव्य देवता को समझ नहीं पाए। समझ लेंगे तो इनका भी यही हाल हो जायेगा। उन्होंने आर्यसमाज अमृतसर के उत्सव पर भाषण देते हुए कहा भी, "ऋषि के महत्त्व का लोगों को दो सौ वर्ष बाद बोध होगा जब विद्वान् पक्षपात त्याग कर उनके ग्रन्थों पर विचार करेंगे। अभी लोगों की यह स्थिति नहीं कि उस योगी की बातों को समझ सकें।"

श्रद्धालु शिष्य ने गुरु के जीवन-लक्ष्य को ही अपना जीवन-लक्ष्य बना लिया और एक ऐसे संसार की रचना करने की सोचने लगे जिसका चिन्तन एक हो, मनन एक हो, भाव एक हो, धर्म एक हो, इष्ट एक हो ताकि एक पिता के पुत्र परस्पर बन्धुत्व के सूत्र में बँधे हों। सबके सुःख-दुःख साँझे हों। शोषण, भुखमरी, असमानता, अज्ञान, अंधकार तथा अन्याय भूतकाल की कहानी बन जाएँ। देश जन्मजाति की ये दीवारें ढह जाएँ। इसीलिए पण्डित जी नाम के पीछे जन्मजाति लगाने के विरोधी थे। वे इसे गुण-कर्म बोधक नहीं मानते थे और कहा करते थे कि वर्ण केवल चार ही हो सकते हैं। इसलिए वे विदेशों में विवाह के समर्थक थे। एक बार कहने लगे कि हमारा पुत्र बड़ा होकर जब विवाह करना चाहेगा तो उसे अमरीका की किसी कन्या को आर्य बनाकर उसके साथ विवाह की प्रेरणा दूँगा।

ऐसे मानव समाज के निर्माण के लिए आवश्यक था कि संसार में बौद्धिक क्रान्ति पैदा की जाए। इसलिए उन्होंने स्वप्न लिया पाँच सहस्र वर्ष पूर्व एक महाभारत युद्ध पृथ्वी पर हुआ था जिसके कारण वेदादि शास्त्रों का पठन-पाठन समाप्त हो गया। अब एक विद्या रूपी महाभारत की सामग्री पृथ्वी पर एकत्र हो रही है जिसके कारण पुनः वेदों का पठन-पाठन पृथ्वी पर फैलेगा। इस युद्ध का बीज स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज रूपी साधन द्वारा भूगोल में डाल दिया है।



अपनी आत्मा को जगाये

जगाना ही है तो अपनी आत्मा को ही जगा ले।

भगाना ही है तो अपनी बुराइयों को भगा ले।

आत्मा जगृति ही तो सारे सुखों की ही जड है,
तो शीघ्रातिशीघ्र अपनी आत्मा को ही जगा ले।

बुराई के चक्कर में फँस कर पीश जाना,
वो दुःखो की बुरी जड है उन्हीं को ही भगा ले।

वो शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण निष्ठा से ही तू जुड जा,
तोड झन्डट सारी अपनी आत्मा को जगा ले।

- रमण नावलीकर

આર્યસમાજ ગાંધીનગરમાં પ્રતિભા નિર્માણ કાર્યક્રમ યોજાયો

આર્યસમાજ, કાંકરિયા અમદાવાદ દ્વારા ગત તા.૨૩ એપ્રિલ - ૨૦૧૪ ના કાર્યક્રમ ઉત્સાહપૂર્ણ વાતાવરણમાં યોજાઈ ગયો. કિશોર વય ૧૨ થી ૧૬ વર્ષનાં બાળકો માટે યોજાયેલ આ

કાર્યક્રમમાં ત્રણ પ્રકારની સ્પર્ધાઓ રાખવામાં આવેલી હતી. ૧. રમત-ગમ્મત, ૨. ચિત્રકલા અને ૩. પ્રતિભા પ્રદર્શન. જેમાં ગાંધીનગર શહેર-વિસ્તારની પાંચ શાળાઓનાં બાળકોએ ભાગ લીધો હતો. દરેક શાળાઓનાં બાળકો સાથે તેમના આચાર્યશ્રીઓ અને વ્યાયામ શિક્ષકો પણ આર્યસમાજના આમંત્રણથી ઉપસ્થિત રહ્યા હતાં.

રમતગમ્મતમાં લીંબુ ચમચી, કોથડા દોડ, સંગીત પુરશી અને રીંગરોલની સ્પર્ધાઓ હતી. આ લેનાર બાળકો અને દર્શકો તમામને હાસ્યરસ પૂરો પાડ્યો હતો.

ચિત્રકલા સ્પર્ધામાં ભાગલેનારને આર્યસમાજના સભાખંડમાં લગાવેલ મહર્ષિ દયાનંદના વિશાળ ચિત્રને જોઈને પોતાના ડ્રોઇંગ પેપર પ્રતિકૃતિ બનાવવાની હતી.

પ્રતિભા પ્રદર્શનમાં વ્યક્તિગત અને સામૂહિક બંને રીતે અભિવ્યક્તિ કરવાની હતી.

કાર્યક્રમનો પ્રારંભ યજ્ઞથી કરવામાં આવેલ હતાં. યજ્ઞના બ્રહ્મા આચાર્ય શૈલેન્દ્રજી સમગ્ર કાર્યક્રમના સૂત્રધાર હતા. તેમણે બાળકોનાં વિકાસમાં શૈક્ષણિક અને ધાર્મિક સંસ્થાઓની ભૂમિકાનું મહત્વ સમજાવ્યું હતું. તેઓએ બાળકોને પ્રારંભ યોગાભ્યાસ કરાવ્યો હતો.

કાર્યક્રમનાં અધ્યક્ષ સ્થાને આર્યસમાજ-અમદાવાદ અને ગુજરાત પ્રાંતીય આર્ય પ્રતિનિધિ સભાનાં પ્રમુખ શ્રી સુરેશચન્દ્ર અગ્રવાલ હતા. તેઓએ બાળકોને આશીર્વાદ આપી ઉપસ્થિત શિક્ષકસમૂહાય અને અન્ય દર્શકોને જણાવ્યું કે આજે સંતાન

નિર્માણ તરફ વિશેષ ધ્યાન આપવાની જરૂર છે. આજનું બાળક જ આવતી કાલનું ભારત છે. પ્રતિભા નિર્માણ એ જ રાષ્ટ્ર નિર્માણ છે.



મનોરંજક સ્પર્ધાઓએ ભાગ લક્ષ્મણભાઈ, આર્યસમાજનાં



કાર્યકર્તાઓ વગેરે હાજર રહ્યા હતા.

તમામ મહેમાનોનું ઉપવસ્ત્ર, સ્મૃતિચિહ્ન અને સત્યાર્થ પ્રકાશ અર્પણ કરી સન્માન કરવામાં આવ્યું હતું.

ડા. સોમાભાઈ પટેલે પોતાના વિચારો વ્યક્ત કરતા જણાવ્યું કે મહર્ષિ દયાનંદ એક યુગાંતર કરી પુરુષ હતા. આ પ્રસંગે ડા. ધર્મેન્દ્રભા પટેલે સ્વાસ્થ્ય સંબંધી સુંદર વ્યાખ્યાન આપી બાળકોને આહાર-વિહાર અંગે ભાથુ પુરૂ પાડ્યું હતું.

પ્રથમ ત્રણ સ્થાને આવનાર બાળકોને આકર્ષક ઈનામો આપવામાં આવેલ હતા. વિદ્યાલયોને પણ બિરદાવવામાં આવેલ હતા. તેમજ બાકીના તમામ બાળકોને સાંત્વના પુરસ્કાર આપવામાં આવેલ હતા.

સમાજમાં મંત્રીશ્રી ભરતભાઈ આર્યએ તમામનો આભાર માન્યો હતો.

સંસ્થા દ્વારા તમામ માટે ભોજનની વ્યવસ્થા રાખવામાં આવેલ હતી.

આર્યસમાજ જૂનાગઢ દ્વારા રામનવમી ઉજવાઈ

પ્રતિ વર્ષ હિન્દુ સમિતિ દ્વારા આયોજિત રામનવમીની નગર શોભાયાત્રામાં આર્યસમાજ, જૂનાગઢ તરફથી પણ ફ્લોટ સુશોભિત જાગૃતિ માટે ફ્લોટ સુશોભિત કરવામાં ભ્રષ્ટાચાર, અત્યાચાર, બેરોજગારી, મતદાતા પોતાની વ્યક્તિગત ફરજ બજાવે તૈયાર કરવામાં આવ્યો. તેમજ આર્યસમાજ શું છે? તેના સિદ્ધાંતો વગેરેની આવી. આર્યવીરો દ્વારા બેઝિમ વગેરેના આવ્યા. દર વર્ષે આર્યસમાજ, જૂનાગઢ જાગૃતતા માટેના ફ્લોટ શોભાયાત્રામાં પ્રભાવ પડે છે. નગરજનો પણ પ્રસંસા કરે છે.



પ્રતિ વર્ષ હિન્દુ સમિતિ દ્વારા આયોજિત રામનવમીની નગર શોભાયાત્રામાં આર્યસમાજ, જૂનાગઢ તરફથી પણ ફ્લોટ સુશોભિત જાગૃતિ માટે ફ્લોટ સુશોભિત કરવામાં ભ્રષ્ટાચાર, અત્યાચાર, બેરોજગારી, મતદાતા પોતાની વ્યક્તિગત ફરજ બજાવે તૈયાર કરવામાં આવ્યો. તેમજ આર્યસમાજ શું છે? તેના સિદ્ધાંતો વગેરેની આવી. આર્યવીરો દ્વારા બેઝિમ વગેરેના આવ્યા. દર વર્ષે આર્યસમાજ, જૂનાગઢ જાગૃતતા માટેના ફ્લોટ શોભાયાત્રામાં પ્રભાવ પડે છે. નગરજનો પણ પ્રસંસા કરે છે.

આર્યવીર દળ ટંકારાનો સ્થાનીય શિબિર યોજાયો

આર્યવીર દળ ટંકારા દ્વારા સન્ જના દ્વારા દર વર્ષે સ્થાનીય શિબિર ચાલુ વર્ષનો ગ્રીષ્મકાલીન એપ્રિલ થી ૨૭ એપ્રિલ ગયો. જેમાં ૪૦ લીધુ.



ટંકારાની સ્થાપના ૧૯૮૪ થી કરવામાં દિવાળી અને ઉનાળુ યોજવામાં આવે છે. પ્રશિક્ષણ શિબિર - ૨૦૧૪ સુધી આર્યવીરોએ



આર્યસમાજ આવેલ છે. રજાઓમાં તદનુસાર તા. ૨૦ યોજાયેલ પ્રશિક્ષણ

આર્યવીરોને સર્વાંગસુંદરવ્યાયામ, આસન, સૂર્યનમસ્કાર, ભૂમિનમસ્કાર, જિમનાષ્ટીક-સળગતી રીંગમાંથી પસાર થવું- વિવિધસ્તુપ બનાવવા તેમજ વૈદિક સિદ્ધાંતો અને અનુશાસનનું પ્રશિક્ષણ આપવામાં આવ્યું. પ્રશિક્ષક તરીકે પંડિત સુવાસ શાસ્ત્રીએ સેવા આપી હતી. શિબિરના અંતે આર્યવીરોને પુરસ્કાર આપવામાં આવ્યા હતા.

સિંહોલ મુકામે આર્યસમાજ સ્થાપના દિવસની ઉજવણી કરાઈ

વિક્રમ સંવત ૨૦૭૦ ના ચૈત્ર સુદી એકમને સોમવાર તા.૩૧-૩-૨૦૧૪ ના રોજ સવારે ૧૦ થી બપોરે ૨-૦૦ દરમ્યાન પેટલાદ તાલુકાના સિંહોલ ગામના મહાકાળીપુરા વિસ્તારમાં ચરોતર પ્રદેશ આર્યસમાજ, આણંદની શાખા આર્યસમાજ સિંહોલના સહયોગથી મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતીએ સને ૧૮૭૫માં મુંબઈમાં સ્થાપિત આર્યસમાજના ૧૪૦ માં સ્થાપના દિવસની ભવ્ય ઉજવણીનો કાર્યક્રમ યોજાય ગયો. આ પ્રસંગે ચ. પ્ર. આર્યસમાજ, આણંદના પ્રધાન શ્રી કનકસિંહજી વાઘેલા, માનદ્ મંત્રી આર્કિ. અશોક પટેલ, વ્યવસ્થાપક શ્રી વિજયકુમાર આર્ય, પુરોહિત શ્રી કનુપ્રસાદ



શાસ્ત્રી તથા શાખા આર્યસમાજ સિંહોલના તમામ સભ્યો, શાખા આર્યસમાજ કરમસદના સભ્યો - ગાંધીનગરથી ખાસ આમંત્રિત મહેમાનો વાનપ્રસ્થી શ્રી મહેન્દ્રભાઈ ગાંધી તથા વૈદિકપ્રવક્તા શ્રી અરવિંદભાઈ રાણા પ્રાથમિક શાળાના વિદ્યાર્થી ભાઈ-બહેનો શિક્ષકમિત્રો તથા સ્થાનિક ગ્રામજનો વગેરે મળીને આશરે ત્રણસો જેટલાં વ્યક્તિઓએ ઉત્સાહભરે ભાગ લીધો હતો.

કાર્યક્રમની શરૂઆત વૈદિક મહાયજ્ઞથી કરવામાં આવી. ત્યાર બાદ હાજર સૌએ ગાયત્રી મંત્રની ત્રણ ત્રણ આહુતિ મહાયજ્ઞમાં શ્રદ્ધા-ભક્તિપૂર્વક અર્પી હતી. સામૂહિક યજ્ઞ પ્રાર્થના

અને આરતીનું ગાન કરવામાં આવ્યું હતું.

આ પ્રસંગે ગાંધીનગરથી પધારેલા વાનપ્રસ્થી શ્રી મહેન્દ્રભાઈ ગાંધીએ આર્યસમાજ અને મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતીજીના જીવન વિષે પોતાનું મંતવ્ય રજૂ કર્યું હતું તથા વૈદિક પ્રવક્તા શ્રી અરવિંદભાઈ રાણાએ પણ આર્યસમાજની સ્થાપના - ઉદ્દેશ્ય - ગતિવિધિ વગેરેનો ખ્યાલ આપીને આર્યસમાજ હિન્દુ સમાજ શા માટે આવશ્યક છે? જીવનમાં કેવી રીતે પરિવર્તન લાવી શકાય - વૈચારિક શક્તિ મેળવવા માટે સત્યાર્થપ્રકાશ અને વેદોનું પઠન - પાઠન ખૂબ જ જરૂરી છે વગેરે બાબતોની સમજૂતી સરળ ભાષામાં દૃષ્ટાંત સહિત આપી હતી.

આચાર્ય વિદ્યાદેવજીએ મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતીએ કેવા કપરા સંજોગોમાં પોતાનું જીવન વિતાવ્યું - કેવી રીતે વેદોનું શિક્ષણ મેળવ્યું તથા ગુરુ વિરજાનંદજીની પ્રેરણાથી કેવી રીતે રીતે વેદોનો પુનરોદ્ધાર કર્યો તેમજ આઝાદીની ચળવળમાં આર્યસમાજીઓએ ખૂબ જોરશોરથી ભાગ લીધો વગેરે ઐતિહાસિક તથ્યોને રજૂ કર્યા હતા.

અંતમાં સંસ્થાવતી વ્યવસ્થાપકે હાજર સૌનો કાર્યક્રમમાં હાજર રહી સફળ બનાવવા બદલ હાર્દિક આભાર માન્યો હતો. સંસ્થાએ પ્રચારાર્થે વૈદિક સાહિત્ય ભેટ આપ્યું હતું.

વાનપ્રસ્થ સાધક આશ્રમ મેં સ્વામી રામદેવ જી કા આગમન

૨૪ ફરવરી, ૨૦૧૪ કો સ્વામી રામદેવ જી વાનપ્રસ્થ સાધક આશ્રમ, આર્યવન, રોજડ મેં પધારે। સાયંકાલ કા ભોજન ગ્રહણ કરને કે પશ્ચાત્ સ્વામી રામદેવ જી ને પૂજ્ય સ્વામી સત્યપતિ જી પરિવાજક કે પાસ જા કર ઉનસે પ્રેરણા ઓર આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કિયા।

આચાર્ય સત્યજિત્ જી ને વાનપ્રસ્થ સાધક આશ્રમ મેં ચલને વાલે કાર્ય કે બારે મેં સ્વામી રામદેવ જી પરિચય કરાયા। સ્વામી મુક્તાનન્દ જી પરિવાજક કે આચાર્યત્વ મેં સંસ્કૃત ભાષા, વ્યાકરણ ઓર આચાર્ય સત્યજિત્ જી કે સાનિધ્ય મેં દર્શન પઢનેવાલે બ્રહ્મચારિયોં કો ઇવં વાનપ્રસ્થિયોં તથા આગન્તુક મહાનુભાવોં કો આધે ઘન્ટે તક પ્રેરણાદાયક ઉપદેશક કિયા।

ચરોતર પ્રદેશ આર્ય સમાજ આણંદ દ્વારા રામનવમી પર્વની ઉજવણી સંપન્ન

ચરોતર પ્રદેશ આર્યસમાજ, આણંદ ખાતે પવિત્ર યજ્ઞશાળામાં સંવત ૨૦૭૦ ના ચૈત્ર સુદી નોમને મંગળવાર તા.૦૮-૦૪-૨૦૧૪ ના રોજ સાંજે ૫-૩૦ કલાકે શ્રી રામ નવમી પર્વની પરંપરાગત રીતે ઉજવણી કરવામાં આવી. જેમાં સંસ્થાના માનદ્ મંત્રી આર્કિ. અશોકભાઈ પટેલ, અંતરંગ સભ્યો - સર્વ શ્રી રમણભાઈ પટેલ, શ્રી રાજેન્દ્રસિંહ રાજ, શ્રી ગોરધનભાઈ આર્ય, શ્રી રાજેશભાઈ સોઢા, શ્રી કેતનભાઈ પટેલ તથા શાખા આર્ય સમાજના સભ્યશ્રીઓ તથા પરિવારજનો અને આમંત્રિત મહાનુભાવોએ ઉત્સાહપૂર્વક ભાગ લીધો હતો.

આર્ય પર્વોની પરંપરાનુસાર કાર્યક્રમનો પ્રારંભ વૈદિક પ્રાર્થનાથી કરવામાં આવ્યો. ત્યાર બાદ પં. વિજયકુમાર આર્ય (સિદ્ધાંતાચાર્ય) ના બ્રહ્મત્વમાં વૈદિક મહાયજ્ઞનું આયોજન કરવામાં આવ્યું તથા રામનવમી પર્વ નિમિત્તે વિશેષ વેદમંત્રથી આહુતિ અર્પીને પરમકૃપાળુ પરમેશ્વર પાસે પ્રાણી માત્ર માટે મંગળકામનાની પ્રાર્થના કરવામાં આવી. ત્યાર બાદ હાજર સૌ એ સર્વાંગિણ ઉન્નતિની કામના સાથે મહાયજ્ઞમાં શ્રદ્ધાપૂર્વક વિશેષ હવનસામગ્રીથી આહુતિઓ પ્રદાન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. પર્વ યજ્ઞ બાદ સામૂહિક યજ્ઞ પ્રાર્થના તથા વૈદિક આરતી ગાન ભક્તિમય વાતાવરણમાં કરવામાં આવ્યું હતું.

આ પ્રસંગે પં. વિજયકુમાર આર્યએ પધારેલા આર્યજનોને સંબોધતા જણાવ્યું હતું કે મર્યાદા પુરુષોત્તમ શ્રીરામનું જીવન ચરિત્ર અતિ ઉત્તમ અને પ્રેરણાદાયક છે, તેથી જ આજે નવ લાખથી વધુ વર્ષ વિત્યા છતાંયે એ મહાપુરુષને આપણે સૌ યાદ કરીએ છીએ. અને આખી દુનિયામાં શ્રીરામના કાર્યોની પ્રશંસા થાય છે. આજે પણ વિશ્વભરમાં શ્રીરામની કીર્તિ વિદ્યમાન છે. મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતીના મતે શ્રીરામ મર્યાદા પુરુષોત્તમ હતા. તેઓ જીવનપર્યંત મર્યાદાની સ્થાપના માટે પ્રયત્નશીલ રહ્યા અને સફળ થયા. તેમનામાં આર્યોચિત સદ્ગુણોનો ભંડાર સમાયેલો હતો અને તેથી ચક્રવર્તી સમ્રાટ તરીકે તેઓની કીર્તિ દિગ્ દિગંત સુધી અને આજ પર્યંત પ્રસરી છે અને જ્યાં સુધી સૃષ્ટિ રહેશે ત્યાં સુધી કીર્તિ રહેશે. શ્રીરામના યથાર્થ જીવન ચરિત્રનો બોધ વાલ્મીકી રામાયણના અધ્યયનથી પ્રાપ્ત થાય છે.

ધાર્મિક ક્ષેત્રે મોટા ભાગના લોકો શ્રીરામને ઇશ્વરનો અવતાર માને છે પણ આ એક ભ્રામક માન્યતા છે આ અંગે સ્વયં વાલ્મીકી રામાયણ શું કહે છે તે આપણે જાણીએ. રામાયણની શરૂઆતમાં મહર્ષિ વાલ્મીક મુનિ નારદને પૂછે છે કે - હે મહર્ષિ! આ ભૂલોકમાં પ્રસંશનીય ગુણો વાળો, પરાક્રમવાળો, શ્રૌત સ્માર્ત ધર્મના રહસ્યને જાણનારો, કૃતજ્ઞ, સત્યવક્તા, આપત્તિમાં પણ ગ્રહણ કરેલા નિયમોનો ત્યાગ નહીં કરનારો, ઉત્તમ ચરિત્રવાળો, સર્વ પ્રાણીઓનું હિત કરનારો, આત્મ-અનાત્મ પદાર્થને જાણનારો, તેજસ્વી, ઇર્ષ્યા રહિત અને યુદ્ધ સમયે જેને કોધેલો જોઈને દેવો તેમજ અસુરો પણ ભય પામે એવો પુરુષ આ સમયમાં કોણ છે ? આ સર્વ ગુણો એક જ પુરુષમાં હોય તેવા પુરુષને જાણવાની મને ઉત્કંઠા છે.

આના જવાબમાં નારદ કહે છે - હે મુનિ! તમે જે ગુણોનું વર્ણન કર્યું, તે સર્વ ગુણો એક જ પુરુષમાં હોવા અતિ દુર્લભ છે, તો હું પણ વિચાર કરીને તેવો પુરુષ કોણ છે તે કહું છું, તે તમે સાંભળો. આધુનિક સમયમાં ઇક્વાકુવંશમાં ઉત્પન્ન થયેલા અને લોક વિખ્યાત રામ આ સર્વ ગુણોથી સંપન્ન છે. આમ કહીને નારદ શ્રીરામના અલૌકિક ગુણોનું વર્ણન કરે છે.

અહીં વાલ્મીકીએ વિશિષ્ટ ગુણોયુક્ત પુરુષ અંગે પૂછ્યો હતો અને નારદ આવા ગુણ વાળા પુરુષની માહિતી આપે છે. અહીં અવતારવાદની કોઈ ગંધ સુદ્ધા નથી. આમ શ્રીરામ મર્યાદા પુરુષોત્તમ હોવાથી મહાપુરુષ હતા તે નિર્વિવાદ છે. અર્વાચીન ઇતિહાસકારો રામાયણને ઐતિહાસિક ગ્રંથ નહીં પણ કાલ્પનિક ગ્રંથ માને છે. તે તદ્દન ખોટું છે. શ્રીરામ એ ભારતીય સાહિત્ય, સંસ્કૃતિ અને ઇતિહાસને સૌથી વધુ પ્રભાવિત કરનારા મહાપુરુષ છે. શ્રીરામના જીવન ચરિત્રમાંથી આપણે સૌ એ પ્રેરણા મેળવીને આપણા જીવનને ઉચ્ચ આદર્શવાળું બનાવવા સંકલ્પબદ્ધ થવું એ આજના પર્વ સંદેશો છે, માહાત્મ્ય છે.

પર્વ પ્રસંગે હાજર સૌનો સંસ્થાવતી માનદ્ મંત્રીએ હાર્દિક આભાર માન્યો હતો. આ પ્રસંગે સૌને વૈદિક પુસ્તકોના સેટ ભેટ આપ્યા હતા. તથા શાંતિપાઠ કરી અને પર્વની ઉજવણી સફળતા પૂર્વક સંપન્ન થઈ હતી.

સાર્વદેશિક આર્યવીરાંગના દળનો રાષ્ટ્રીય પ્રશિક્ષણ શિબિર ૧ જૂન થી ૮ જૂન ટંકારા (ગુજરાત) ખાતે યોજાશે.

સાર્વદેશિક આર્ય વીરાંગના દળનો રાષ્ટ્રીય વાર્ષિક પ્રશિક્ષણ શિબિર આગામી તા.૧ જૂન થી ૮ જૂન ૨૦૧૪ સુધી મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતી સ્મારક મહાલય - ટંકારા ખાતે યોજાશે. જેમાં ભારતનાં વિવિધ પ્રાંતોની આર્યવીરાંગનાઓ ભાગ લેશે અને શારીરિક તથા બૌદ્ધિક પ્રશિક્ષણ મેળવશે.

ગુજરાતની બાળાઓને આ શિબિરમાં જોડાવા આમંત્રણ છે. ૧૩ થી ૨૦ વર્ષની વયની કોઈ પણ બાળાઓ શિબિરમાં જોડાઈ શકશે. ભાગ લેવા ઇચ્છતી બાળાઓએ પોતાના વાલીની સંમતિ સાથે નિયત પ્રવેશપત્ર અને શિબિર ફી રૂ.૨૫૦/- તા.૨૦-૫-૧૪ સુધીમાં ટંકારા

ખાતે પહોંચતા કરવાના રહેશે. પ્રવેશપત્ર નજીકની આર્યસમાજમાંથી મળશે, અથવા શિબિર સંચાલકનો સંપર્ક કરવો.

શિબિરાર્થીએ સાથે લાવવાની વસ્તુઓ સફેદ સલવાર, સફેદકુર્તો, કેસરી દુપટ્ટો, સફેદસુઝ, સફેદમોજા, સાદાં કપડાં, ન્હાવા-ઘોવાનો સામાન, દંતમંજન, ઓઢવા-પાથરવાની ચાદર, નોટબૂક, પેન.

હસમુખ પરમાર
સંચાલક

રામદેવ શાસ્ત્રી
વ્યવસ્થાપક

સાઘવી ઉત્તમાચતિ
શિબિરાધ્યક્ષા

૯૯૭૯૩૩૩૩૪૮

૯૯૧૩૨૫૧૪૪૮

૯૬૭૨૨૮૬૮૬૩

1	વા		2		સ			મ
3	ભ	વા		શ્રી			4	
5			6	રે				
7	સ્તિ		8		રા			૩
9	ગ			શ	10	ગ્યા		
11	વી		સા			૨	12	મા
13	૨		૨			૬	14	
15		દા		ભા				

ચાળક્ય નીતિ

મુર્ખ શિષ્યોપદેશેન વામા સ્ત્રીભરણેન ચ ।
દુઃખિતૈ સહવાસેન પઞ્ડિતોઽપ્યોવસીદતી ॥

મુર્ખ શિષ્ય કો ઉપદેશ કરને સે, દુષ્ટ સ્ત્રી કો જેવર આદિ સે સજાને સે, દુઃખિયોં કે નિરન્તર સાથ રહેને સે બુદ્ધિમાન મી દુઃખી હોને લગતે હૈ ।

(પદ્યાર્થ) ॥ દોહા ॥

કુલટા કો અલંકાર દે, મુર્ખ કો ઉપદેશ ।
દુઃખિયોં કે સહવાસ સે, પઞ્ડિત પાવે વ્લેશ ॥

દુષ્ટા માર્યા શઠં મિત્રં મૃત્યાશ્ચોત્તરદાયકઃ ।
સસર્પે ચ ગૃહે વાસો મૃત્યુરેવ ન સંશયઃ ॥

દુષ્ચારિત્રા પત્ની, કપટી વ સ્વાર્થી મિત્ર, બાત કા પ્રતિવાદ કરને વાલા સેવક ઓર સર્પ કે નિવાસ વાલા ઘર ઇન ચારોં સ્થિતિયોં કે ઉપસ્થિત હોને પર મૃત્યુ હી સમજો, ઇનમેં સન્દેહ નહીં હૈ ।

(પદ્યાર્થ) ॥ દોહા ॥

નીચ નારિ અરુ મિત્ર શેઠ, સેવક હો વાચાલ ।
સાંપ વાસ ઘર મેં કરે, નિશ્ચય જાનો કાલ ॥

આપદર્થે ધનં રક્ષેદ્ દારાન્ રક્ષેદ્ધનૈરપિ ।
આત્માન્ સતતં રક્ષેદ્ દારૈરપિ ધનૈરપિ ॥

આપત્તિકાલ કે લિપ ધન રખે, ધન દ્વારા સ્ત્રિયોં કી રક્ષા કરે, ધન ઓર સ્ત્રી દ્વારા સ્વયં અપના કલ્યાણ સાધન નિરન્તર કરના ચાહિપ ।

(પદ્યાર્થ) ॥ દોહા ॥

યદિ આપદ કાલ પડે કબહૂં, ઇસકે હિત હી ધન કો રખ લીજે ।
ધન દેકર નારિ સુખી રખના, મત નારિ બિના ધન કે તજ દીજે ॥
ઇસ ખાંતિ સહી ધન નારિ રખો, યહ બાત ગુણી જન કી ગુન લીજે ।
અપના હિત હો પ્રમુ પન્થ મિલે, ધન નારિ તજે, અનુરાગ ન કીજે ॥

દરેક આડી લાઈન :

૧. ત્રણ અનાદિ તત્વોમાં ક્યુ તત્વ સુખની ઈચ્છા રાખે છે. (૩)
૨. ચાર આશ્રમોમાં ક્યો આશ્રમ સમાજને સાચો રસ્તો બતાવે છે. (૬)
૩. ભારતનો ઇતિહાસ લખનાર પાશ્ચાત્યો ક્યા મહાપુરુષનું અસ્તિત્વ મીટાવવા પ્રયત્નશીલ છે. (૭)
૪. સંસારનો પ્રાચીનતમ અપૌરુષેય ગ્રંથ. (૨)
૫. આ ત્રણમાં કોનું મુલ્ય વધુ છે. સંપત્તિ - સમય - સંતતિ (૩)
૬. ભારતના ઘોષિત વડાપ્રધાન પદના ઉમેદવાર. (૫)
૭. શરીર દુર્બલ હોવું એ બહુ ચિંતાની વાત નથી. પણ આ આંતરિક અંગ કમજોર હોવું એ ચિંતાની વાત છે. (૩)
૮. ભારતના ક્યા પ્રદેશની સરહદ ચીન અને નેપાળ સાથે જોડાયેલ છે. (૫)
૯. ક્યા દેશની આશરે ૩ થી ૪ કરોડ જનસંખ્યા ભારતમાં રહે છે. (૫)
૧૦. ભારતના કેટલાં રાજ્યોની સરહદ હિન્દ મહાસાગરનો સ્પર્શ કરે છે. (૩)
૧૧. ૨૮ મે ૧૮૮૩ માં નાસિકના ભાગુર ગામમાં જન્મેલ ક્રાંતિકારી પુરુષ (૭)
૧૨. ધર્મનાં દશ લક્ષણો માંહેનો એક - (૨)
૧૩. જન્મુકાશ્મીરનો નિર્ણય આ વ્યક્તિ પાસે હોત તો સમસ્યા ન હોત. (૭)
૧૪. ક્યા દેશથી સાવધ રહેવા પટેલે નહેરુને પત્ર લખ્યો હતો. (૨)
૧૫. સ્વામિ દયાનંદ રચિત એક ગ્રન્થ. (૯)

::: આર્યવૈદિક દર્શન અંગે સૂચના :::

- આર્યવૈદિક દર્શનનું નવા વર્ષ ૨૦૧૪-૧૫ નું વાર્ષિક લવાજમ રૂ. ૧૦૦/- દરેક ગ્રાહકોને મોકલી આપવા વિનંતી.
- જે ગ્રાહકોનું પાછલા વર્ષનું લવાજમ બાકી હોય તેમણે બે વર્ષનું લવાજમ સાથે મોકલવું.
- લવાજમ મનીઓર્ડર વડે જ નીચેના સરનામે મોકલવું.

પ્રવીણભાઈ ઠાકર

વ્યવસ્થાપક

આર્ય વૈદિક દર્શન

આર્યસમાજ, મહર્ષિ દયાનંદ માર્ગ, હાથીખાના,

રાજકોટ

શબ્દકોઠાનો એપ્રિલ-૧૪ નો ઉકેલ

1	મ	ર્ષા	દા	પુ	રુ	ખો	ત	મ	રા	મ	
2	રા	મ	ન	વ	મી		3	બ	ચ્છો	વા	લી
4	અ	સ	મ્પ્ર	જ્ઞા	ત		5	ચુ	ની	લા	લ
6	લા	લા	લા	જ	પ	ત	રા	ય			
7	સ્વા	યં	ભ	વ		8	ના	મ	ક	૨	ણ
9	બ્રા	ભ	મુ	હૂ	ર્ત		10	મા	ન	સિ	ક
11	ય	જુ	વે	દ		12	પ	૨	મા	ત્મા	
13	સં	ગ્ર	દા	લ	ય		14	જા	તિ	વા	દ



આર્યાભિવિનય

મહર્ષિ દયાનંદ સરસ્વતી



મૃઠા નો રુદ્રોત નો મયસ્કૃધિ ક્ષયદ્વીરાય નમસા વિધેમ તે
યચ્છં ચ યોશ્ચ મનુરાયેજે પિતા તદશ્યામ તવ રુદ્ર પ્રણીતિષુ ॥૪૫॥

ઋં ૧ ૮ ૧૫ ૨ ૧ ૧

વ્યાખ્યાન : હે દુષ્ટોને રડાવનાર રુદ્રેશ્વર ! અમને મૃદ સુખી કરો. તથા મયસ્કૃધિ અમને મય અર્થાત્ અત્યંત સુખ પ્રાપ્ત કરાવો. ક્ષયદ્વીરાય, નમસા, વિધેમ તે શત્રુઓના વીરોનો ક્ષય કરનારા ! અત્યંત નમસ્કારાદિથી આપની સેવા કરનારા- અમારા લોકોનું સારી રીતે રક્ષણ કરો. યચ્છમ્ હે રુદ્ર ! આપ અમારા પિતા (જનક) અને પાલક છો. અમારી સર્વ પ્રજાઓને સુખી કરો. યોશ્ચ પ્રજાના રોગોનો પણ નાશ કરો. જેવી રીતે મનુઃ માન્યકારક પિતા આયેજે પોતાનાં સંતાનોને સન્માર્ગગામી બનાવીને અનેક રીતે લાડ લડાવે છે. તેવી રીતે આપ અમારું પાલન કરો. હે રુદ્ર ભગવન્ ! તવ, પ્રણીતિષુ આપની આજ્ઞાનો પ્રણય (કરીએ) અર્થાત્ ઉત્તમ ન્યાયયુક્ત નીતિઓમાં પ્રવૃત્ત રહીએ. (નીતિઓ અનુસાર ચાલીએ.) અને તદશ્યામ આપના અનુગ્રહથી વીરોનું ચક્રવર્તી રાજ્ય પ્રાપ્ત કરીએ. ॥૪૫॥



અંધવિશ્વાસ અને તેનું નિવારણ

- મદન રહેજા



અંધ વિશ્વાસ - ભવિષ્યવાણી કરનારી જ્યોતિષ-વિદ્યા ખોટી ન કહેવાય કારણ કે તેનાથી અનેક લોકોનું ભાગ્ય સુધરી જાય છે.

નિવારણ - જ્યોતિષ વિદ્યાને ખોટી કહેવી એ ભૂલ છે. જ્યોતિષિંડોની સ્થિતિ અને ગણતરી, ક્યારે ક્યો ગ્રહ-ઉપગ્રહ નક્ષત્રવગેરે ક્યાં હશે તે અંગેનું જ્ઞાન જે વિદ્યાથી મળે છે તે જ્યોતિર્વિદ્યા છે. સૂર્ય ગ્રહણ કે ચંદ્ર ગ્રહણ ક્યારે થશે તે આ વિદ્યાથી જ મળે છે; કારણ કે ગ્રહ-ઉપગ્રહ-નક્ષત્રોનું ભ્રમણ એ પ્રકૃતિના નિયમોનુસાર જ થાય છે. પ્રકૃતિનાં એ નિયમોને વેદમાં 'ઋત' કહેલ છે. 'ઋત' (પ્રાકૃતિક નિયમો) ને બદલી શકાતા નથી. આ નિયમોના આધારે ગ્રહો-ઉપગ્રહોની સ્થિતિની ભવિષ્યવાણી કરવી એ જ્યોતિષ વિદ્યા છે. પરંતુ જ્યોતિષ લોકો તેના દ્વારા ફલાદેશ કરે છે. તે યોગ્ય નથી. તે અવૈદિક-સૃષ્ટિ નિયમોની વિરુદ્ધ અસત્ય છે. કોઈ મનુષ્યના ભાગ્યને જાણવું તો દૂર રહ્યું પરંતુ આજે અત્યારે શું થશે તે પણ કોઈ બતાવી ન શકે. અનુમાન તો કોઈ પણ વ્યક્તિ કરી શકે છે. આપણે જે પણ કર્મ કરીએ છીએ તેના આધારે એટલું તો અનુમાન આપણે સ્વયં પણ લગાવી શકીએ કે આનું શું ફળ મળશે ?

કોઈનું ભાગ્ય કોઈ જાણી શકતું નથી. આપણું ભાગ્ય આપણે સ્વયં ઘડીએ છીએ, આપણે કરેલાં કર્મ જ ભાગ્ય બને છે. કરેલાં કર્મનું ફળ અવશ્ય મળે છે, જેવાં કર્મ તેવું ફળ. કર્મફળને કોઈ જ્યોતિષી બદલી શકતો નથી. કોઈ ગ્રહ આપણાં ભવિષ્યને ન સુધારી શકે કે ન બગાડી શકે. કર્મફળ ઈશ્વર આપે છે. ઈશ્વર જે કંઈ કરે છે તે સાઢ જે કરે છે; આપણી ભલાઈ માટે કરે છે.

BOOK-POST

પ્રેષક :-

આર્ય વૈદિક દર્શન

આર્યસમાજ,

ટંકારા - ૩૬૩૬૫૦.

જિ. રાજકોટ

પ્રતિ,
